जैन ऐजुकेशन बोर्ड प्रस्तुति

LOOK n LEARN

पाँच रत्न

Rs. 20.00

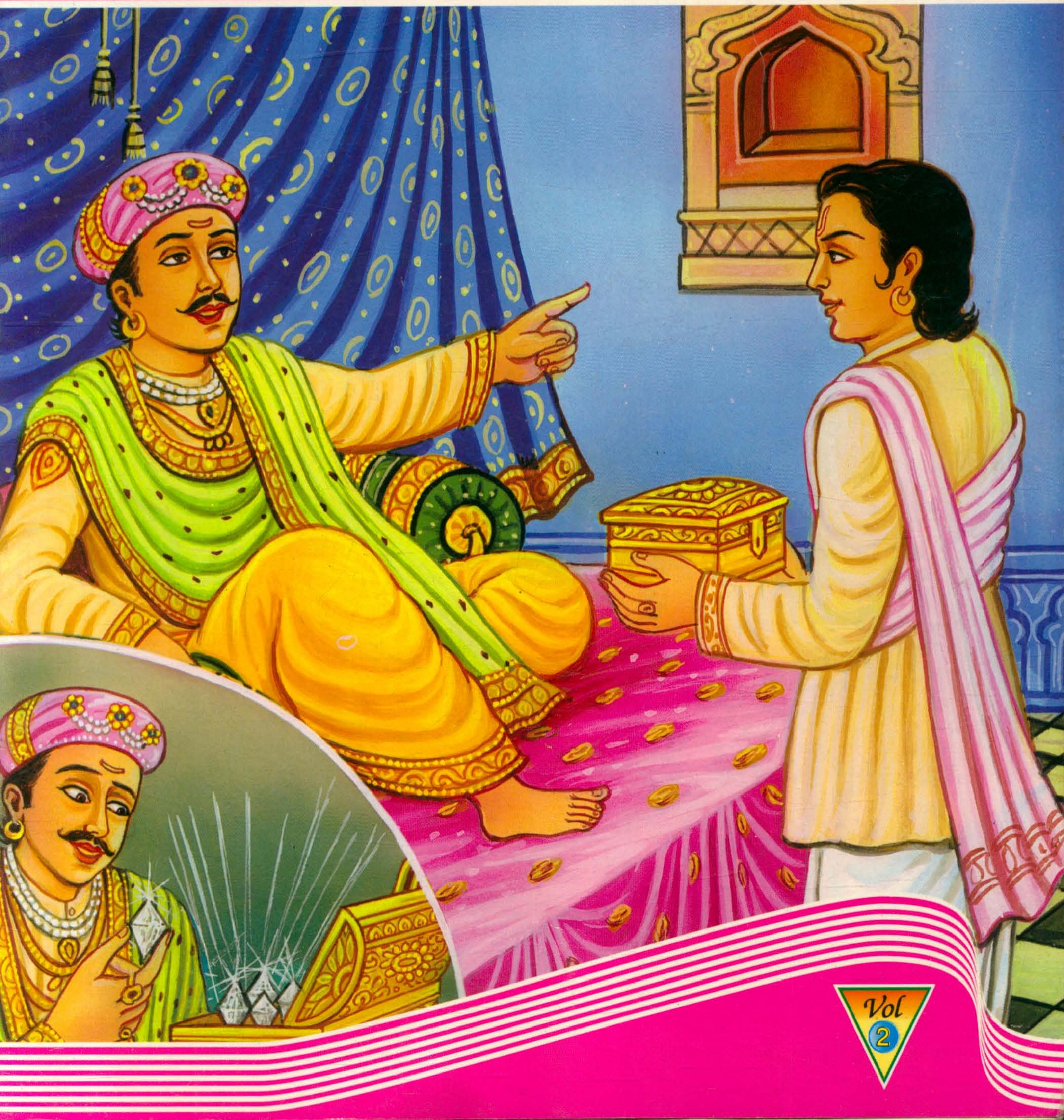

Vol 2

युवा हृदय सम्राट पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनिजी म.सा. की प्रेरणा...

अर्हम युवा ग्रुप

ARHAM YUVA GROUP

पस्ती द्वारा परोपकार के कार्य...

एक नया प्रयोग...

ARHAM YUVA GROUP

करुणा के सागर पूज्य गुरुदेव... जिनके हृदय में दूसरों के हित, श्रेय और कल्याण की भावना रही है... उनके चिंतन से एक अभिनव विचार का सृजन हुआ और उन्होने मानवसेवा, जीवदया के कार्य के साथ अध्यात्म साधना करने के लिए ''अर्हम युवा ग्रुप'' की स्थापना की..!

पूज्य गुरुदेव के प्यार से प्रेरणा पाकर यह महा अभियान समस्त मुंबई के युवक-युवतीओं का एक मिशन बन गया ! इस महा अभियान में प्रतिदिन स्वेच्छा से नये नये युवक युवतियाँ जुडते जा रहे हैं। यह उत्साही युवावर्ग हर माह हजारों किलो की पस्ती एकत्र करके उसका विक्रय करता है और उस राशी से परोपकार के कार्य करता है ।

पूज्य गुरुदेव के मार्गदर्शन और निर्देशन के अनुसार ये युवक-युवतीयाँ हर माह के प्रथम रविवार को पार्टी, पिक्चर या प्रमाद करने के स्थान पर परमात्मा पार्श्वनाथ की जप साधना करके मनकी शांति और समाधि प्राप्त करते हैं।

दूसरे रविवार को सेवा का कार्य करने के लिए घर-घर जाकर अखबारों की पस्ती इकट्ठी करते हैं और कड़वे-मीठे अनुभव द्वारा अपने अहम् को चूर कर, Ego को Go कर, सहनशील और विनम्र बनते हैं ।

तीसरे रविवार को पस्ती से पाये गये रूपयो से गरीब, आदिवासी, बीमार, अपंग, अंधे, वृद्ध आदि की जरूरत पूरी करते है । वे उन्हें केवल वस्तुयें या अनाज, दवा आदि ही नहीं देते अपितु उन्हें प्यार, सांत्वना आश्वासन और आदर भी देते हैं । उनकी दर्दभरी बातें सुनते हैं, अनाथ बच्चों के साथ खेलते हैं और वृद्धजनों को व्हीलचेर पर बैठाकर उनकी इच्छानुसार प्रभु दर्शन आदि कराने भी ले जाते हैं । वे कत्लखाने जाते हुए पशुओं को बचाते हैं । बीमार, घायल पशु-पक्षीयों का इलाज भी कराते हैं ।

बदले में उन्हें क्या मिलता है ? उन्हें एक प्रकार का आत्मसंतोष प्राप्त होता है । वे जो अनुभव करते हैं उसके लिए कोइ शब्द ही नही है । उनका दिल अनुकंपा से भर उठता है।

इन युवाओं ने आजतक दुनिया के सिक्के का सिर्फ एक ही पहलू-सुख ही देखा था । अब सिक्के का दूसरा पहलू दुनिया का दुःख, वास्तविकता देखने के बाद उन्हें अपना सुख अनंत गुना बड़ा लगने लगा है ।

बस ! पूज्य गुरुदेव ने आज की युवा पीढ़ी को शब्दों द्वारा समझाने के बदले प्रयोग द्वारा उनका जीवन परिवर्तन कर दिया । प्रयोग और प्रत्यक्ष देखने और अनुभूति करने के बाद समझाने की जरूरत ही नहीं रही।

चौथे रविवार को अपने पूज्य गुरुदेव के दर्शन करके, उनके सानिध्यमें उनके शुक्ल परमाणुओं द्वारा अपनी ओरा, अपने भाव और अपने विचारों को शुद्ध करके शांतिपूर्ण, निर्विघ्न अपने सारे कार्य सफल करतें हैं और नया मार्गदर्शन... नया बोध... नये विचार पाकर अपना जीवन धन्य बनाते हैं ।

आप भी जीवन में 'गुरु' द्वारा प्रेरणा पाकर परोपकार के इस महा अभियान में अपना सहयोग देवें और अपना अमूल्य मानव जीवन सफल बनायें।

अर्हम ग्रुप के सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें -

Ritesh - 9869257089, Chetan - 9821106360, Jai - 9820155598

हमारा संदेश...

ज्ञान... ज्ञान के बिना जीवन अधूरा है ।

बच्चों के लिए ज्ञान प्राप्ति का सरल माध्यम है आकर्षक और रंगीन चित्र... बच्चे जो देखते हैं वही उनके मानस मे अंकित हो जाता है और लम्बे अर्से तक याद भी रहता है ।

दूसरी बात... आज के Fast युग में बच्चों के पास पढ़ाई के अलावा इतनी साईड एक्टीवीटी है कि उन्हें लम्बी कहानियाँ और बड़ी बड़ी पुस्तकें पढ़ने का समय ही नहीं है ।

हमारे जैनधर्म मे... भगवान महावीर के आगमशास्त्रो में ज्ञान का विशाल भंडार भरा हुआ है । ज्ञाताधर्मकथा सूत्र जैसे आगम में कथानक के रूप में भी कहानियों का खजाना है ।

बाल मनोविज्ञान की जानकारी से हमे ज्ञात हुआ कि बच्चों की रूचि Comics में ज्यादा है । उन्हें पंचतंत्र, रीचीरीच, आर्ची, Tinkle आदि Comics ज्यादा पसंद है और उसे वे दो-चार - पाँच बार भी पढ़ते है और Comics एक ऐसा Addiction है जिसे बड़े भी एक बार अवश्य पढ़ते है । यही विषय पर चिंतन-मनन करते हुए हमारे मानस में भी एक विचार आया... क्यों न हम भी जैनधर्म के ज्ञान को... हमारे भगवान महावीर के जीवन को, हमारे तीर्थंकर को... बच्चों तक पहुँचाने के लिए Comics Book का माध्यम पसंद करे...?

शायद यही माध्यम से बच्चों और बच्चों के साथ बड़े भी जैनधर्म के ज्ञान-विज्ञान की जानकारी पाकर अपने आप में कुछ परिवर्तन लायेंगे ।

परमात्मा के विशाल ज्ञान सागर में से यदि हम कुछ बूंदे भी लोगों तक पहुंचाने में सफल हुए तो हमारा यह प्रयास यथार्थ है ।

जैनधर्म की क्षमा, वीरता, साहस, मैत्री, वैराग्य, बुद्धि, चातुर्य आदि विषयों की शिक्षाप्रद कहानियाँ भावनात्मक रंगीन चित्रों के माध्यम द्वारा प्रकाशित करने का सदभाग्य ही हमारी प्रसन्नता है ।

यह Comics हमारे Jain Education Board - Look n Learn के अंतर्गत प्रकाशित हो रही है ।

प्रस्तावना

भगवान महावीर ने श्रावक के सत्य अणुव्रत के दोषों की चर्चा करते हुए कहा है, जो किसी की धरोहर (न्यास) या अमानत देखकर बदनीयत से लौटाने के लिए मुकर जाता है, असत्य प्रपंच करता है तो उसका सत्य अणुव्रत खण्डित होता है। क्योंकि यह विश्वासघात है, धोखा है। जिसके साथ ऐसा विश्वासघात होता है उसकी आत्मा तिलमिला उठती है, दु:खी होती है और वह उस विश्वासघाती के प्रति वैर व प्रतिशोध की आग में जलने लगता है। इसलिए इस प्रकार का विश्वासघात महापाप है। वैर बढ़ाने वाला है।

'पाँच रत्न' कहानी में एक गरीब ब्राह्मण की अमानत हड़पकर करोड़पति बनने वाले सेठ की कहानी है। जिसने अपनी ईमानदारी की प्रसिद्धि के बल पर गरीब ब्राह्मण के पाँच मूल्यवान रत्न दबा लिए। विश्वासघात की चोट से छटपटाता ब्राह्मण मरकर नाग बनता है और अपने रत्नों के बदले में सेठ के जवान नवविवाहित पुत्रों की जान ले लेता है।

आत्मा का दर्शन तथा दुराग्रह का फल, ये दो कहानियाँ **जैन आगम रायपसेणिय सूत्र** से ली गई हैं। जो **केशीकुमार श्रमण** ने श्वेताम्बिका नगरी के नास्तिक राजा प्रदेशी को सुनाईं और इनके द्वारा आत्मा की पहचान करने तथा सत्य को समझकर अनाग्रह बुद्धि से ग्रहण करने की प्रेरणा दी। अपनी बात का दुराग्रह रखने वाला अन्त में पछताता है।

इस पुस्तक की तीनों कहानियाँ जीवन के लिए प्रेरणादायी तथा सत्य की खोज करने की प्रेरणा देती हैं।

प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान

LOOK n LEARN

Jain Education Board

PARASDHAM

Vallabh Baug Lane, Tilak Road, Ghatkopar (E), Mumbai - 400 077. Tel : 32043232.

मूल्य : २०/- रु.

पाँच रत्न

चम्पापुर में बलभद्र नाम का एक धनवान सेठ रहता था। सेठ के पाँच पुत्र थे। पाँचों ही बड़े विनीत, सुन्दर और बुद्धिमान् थे।

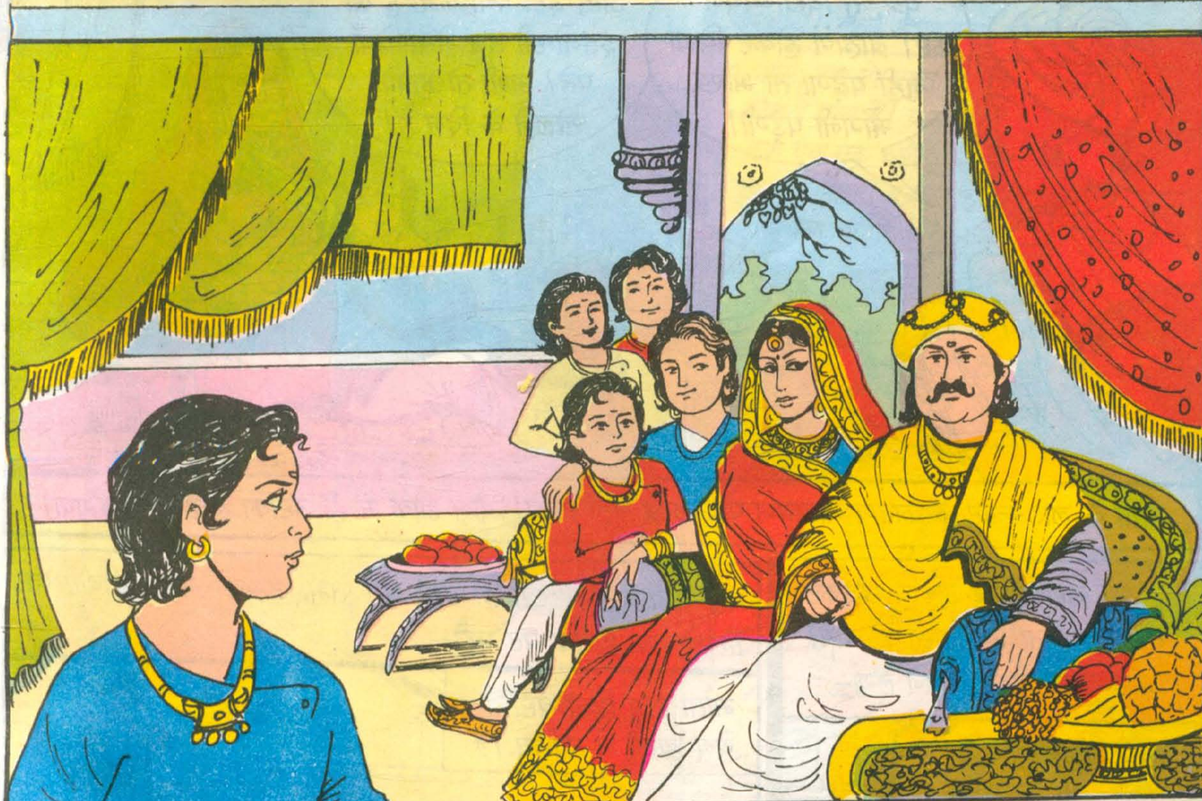

वे माता-पिता अपनी संतान के शत्रु हैं जिन्होंने अपनी सन्तान को शिक्षित नहीं किया।

वह देशाटन पर जाने की तैयारी करने लगा। घर का सामान सँभालते समय अचानक एक पुरानी मंजूषा उसके हाथ में आ गई। मंजूषा खोली तो वह चकित रह गया–
वाह, कितने चमकदार हैं ये पाँच रत्न। जरूर कभी राजा ने प्रसन्न होकर पिताजी को भेंट दिये होंगे।
वह मंजूषा को कपड़े में लपेटकर नगर के प्रसिद्ध जौहरी की दुकान पर ले गया और रत्न दिखाये। रत्न देखकर जौहरी चकित रह गया।
वत्स, यह तो बहुत ही कीमती रत्न हैं। कम से कम एक-एक करोड़ का एक-एक होगा। क्या इन्हें बेचना चाहते हो?
नहीं, बस, कीमत जानना चाहता था।
नारायण मंजूषा लेकर घर वापस आ गया और सुखद भविष्य के सपने देखने लगा–
अब मुझे कमाने की क्या जरूरत है। अब तो खूब मौज-शौक करूँगा, देश-विदेश घूमूँगा। देशाटन से आकर फिर एक रत्न बेचूँगा। बड़ा घर बन जायेगा। विवाह हो जायेगा। बस मौज से रहूँगा।
भविष्य के स्वप्न सँजोकर वह मन ही मन गुदगुदाने लगा। फिर उसने सोचा–
परन्तु पीछे से मंजूषा किसी ने चुरा ली तो। इसे कहीं सुरक्षित रख देना चाहिए।

पिताजी कहते थे, हमारे सामने वाला सेठ बलभद्र बड़ा ही सत्यनिष्ठ धर्मात्मा है, जिनधर्मी श्रावक है! क्यों न इसी के पास धरोहर सुरक्षित रखकर यात्रा पर चलूँ।
दूसरे दिन नारायण रत्न-मंजूषा को कपड़े में लपेटकर सेठ बलभद्र की गद्दी पर पहुँचा और प्रणाम करके बोला–
सेठजी, पहचाना मुझे।
अरे भाई, हाँ, नारायण।
सेठजी, मैं कुछ दिनों के लिये देशाटन पर जाना चाहता हूँ। मेरी एक धरोहर है, आपके पास अमानत में रख लीजिए।
ना ना, पराई धरोहर साक्षात् अग्नि होती है। मैं तो पराया धन छूना भी पाप मानता हूँ।
सेठजी, इसे छूने की जरूरत क्या है। आप अपने यहाँ यह पेटी रखी रहने दीजिए। मैं लौटकर ले लूँगा।

सेठजी ने बड़ी निस्पृहता से इशारा किया–
देख, मैं तो इसको छूता भी नहीं, जा उस कोने में एक तरफ रख दे, वापस लौटकर जल्दी ले जाना।
सेठजी, आपका एहसान कभी नहीं भूलूँगा, मैं जल्दी लौट आऊँगा।
उसने अपने हाथ से मंजूषा एक कोने में रख दी।
अब निश्चिंत होकर नारायण देशाटन को चल पड़ा।
कुछ दिन बाद दीवाली आई। सफाई करते-करते वह मंजूषा सेठ के हाथ में आ गई। खोली तो सेठ चकित रह गया।
हैं, इतने कीमती रत्न ! एक-एक रत्न करोड़ों का होगा।
सेठ ने जैसे ही रत्न हाथ में लिये उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई। परन्तु उसे लगा जैसे उसके कानों में कुछ गूँज रहा हो–
सेठ, पराया धन पाप का पिण्ड होता है, यह काला नाग है।
सेठ के हाथों से मंजूषा छूटकर गिर पड़ी। उसमें से दो रत्न बाहर निकल पड़े।
छन्न।

* न्यासापहार = अमानत में खयानत

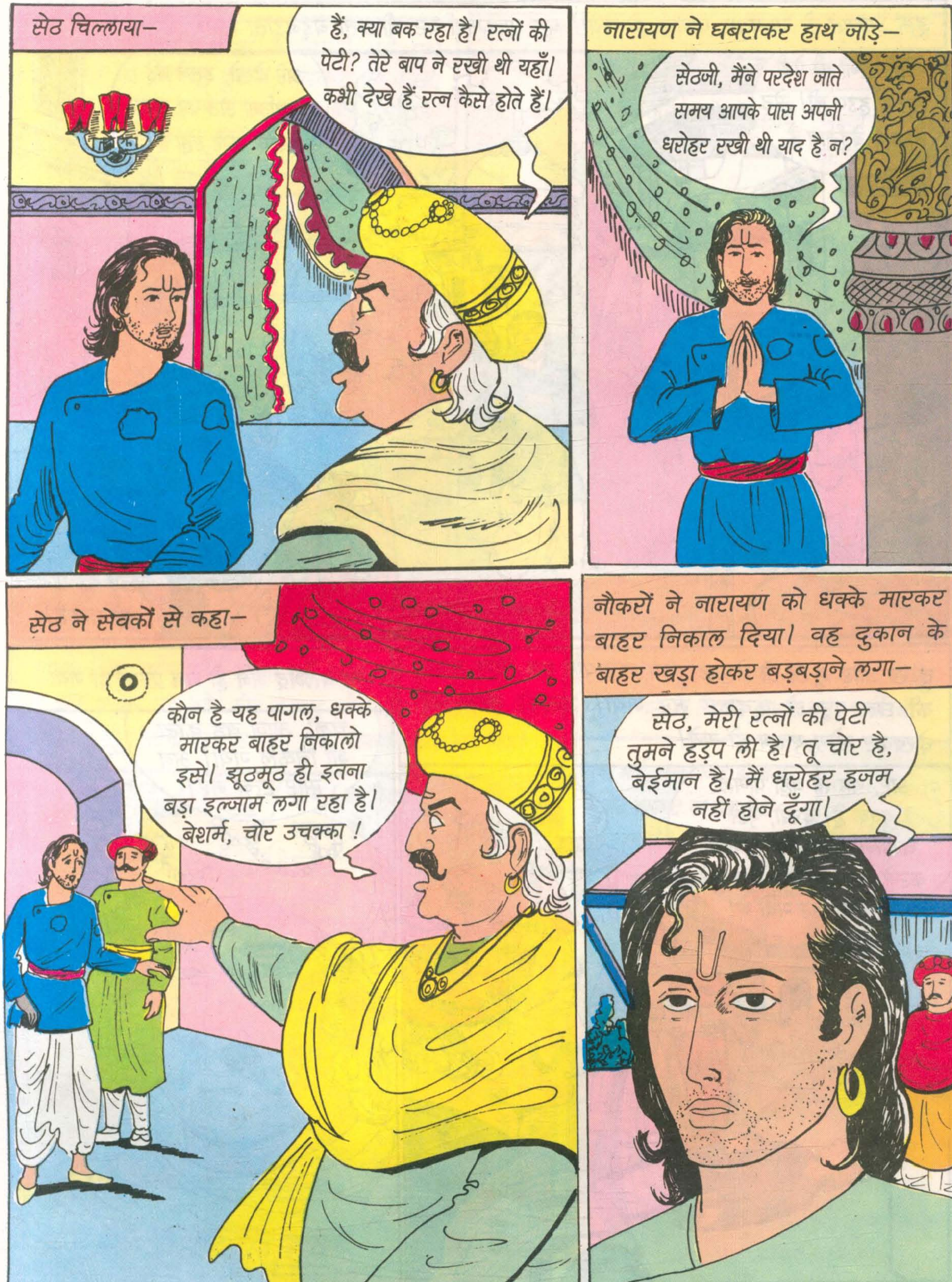
सेठ चिल्लाया–
हैं, क्या बक रहा है। रत्नों की पेटी? तेरे बाप ने रखी थी यहाँ। कभी देखे हैं रत्न कैसे होते हैं।
नारायण ने घबराकर हाथ जोड़े–
सेठजी, मैंने परदेश जाते समय आपके पास अपनी धरोहर रखी थी याद है न?
सेठ ने सेवकों से कहा–
कौन है यह पागल, धक्के मारकर बाहर निकालो इसे। झूठमूठ ही इतना बड़ा इल्जाम लगा रहा है। बेशर्म, चोर उचक्का !
नौकरों ने नारायण को धक्के मारकर बाहर निकाल दिया। वह दुकान के बाहर खड़ा होकर बड़बड़ाने लगा–
सेठ, मेरी रत्नों की पेटी तुमने हड़प ली है। तू चोर है, बेईमान है। मैं धरोहर हजम नहीं होने दूँगा।

इस आघात से नारायण पागल हो गया। वह राजमार्ग पर चीखता बड़बड़ाता घूमने लगा–
मेरी रत्नों की पेटी सेठ ने हड़प ली। सेठ बलभद्र बेईमान है...
अरे देखो, इतने बड़े धर्मात्मा सेठ पर झूठा कलंक लगा रहा है।
जरूर यह पागल हो गया है।
दुःख और भूख से बेहाल हुआ नारायण एक दिन मकान की छत पर से कूदकर मर गया। उसकी लाश पड़ी देखकर लोग एकत्र हो गये।
अरे, यह तो वही पागल युवक है। देखो, ऐसे धर्मात्मा पुरुष को बदनाम करने का फल। आखिर कुत्ते की मौत मर गया न।
सेठ बलभद्र मन ही मन प्रसन्न हो गया–
चलो, आज यह काँटा भी निकल गया। अब सारे रत्न मेरे।

कुछ समय बाद बलभद्र के सबसे बड़े पुत्र श्रीकान्त का विवाह हुआ। नववधू को विदा कराकर श्रीकान्त अपने भवन पर लाया। भवन की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। छह सीढ़ी पार कर सातवीं सीढ़ी पर पैर रखते ही वह जोर से चीखा–
हाय, काट लिया, बचाओ।
देखते ही देखते श्रीकान्त सीढ़ियों पर लुढ़क गया। उसके मुँह से झाग निकलने लगे। सेठ दौड़कर आया।
हाय, मेरे बेटे को क्या हुआ?
अरे, इसे तो काले नाग ने काट लिया।
जल्दी से जहर चूसकर थूक दो।
उपचार किया, परन्तु कोई फायदा नहीं हुआ। कुछ ही देर में श्रीकान्त के प्राण पखेरू उड़ गये। सेठ बलभद्र भी बेहोश होकर गिर पड़ा। उधर बहू भी सीढ़ियों पर गिर पड़ी। चारों तरफ हाहाकार मच गया।
हाय ! यह कैसा अन्याय हो गया। बेचारी शादी होते ही विधवा हो गई।
सभी ने मिलकर शव की अन्त्येष्टि की। पूरे नगर में जिधर देखो यही चर्चा थी–
सुना भाई, क्या गजब हो गया। सेठ बलभद्र का बड़ा बेटा विवाह होते ही चल बसा।
हाँ भाई ! कोई भारी पापकर्म किया होगा सेठ ने। गुप्त पाप इसी प्रकार अपना फल देते हैं।

थोड़े दिन बाद शोक दूर हुआ। लोगों ने सेठ को समझाया–
अब शीघ्र ही दूसरे बेटे शशिकान्त का विवाह कर दो। वातावरण बदल जायेगा, पुराने घाव भर जायेंगे।
एक वर्ष बाद शशिकान्त का विवाह हुआ। विवाह करके शशिकान्त नववधू को लेकर भवन में प्रवेश करने लगा। जैसे ही उसने सातवीं सीढ़ी पर पैर रखा एक काला नाग सीढ़ी के नीचे से निकलकर सामने आ गया।
हे भगवान ! यह काला नाग...।
शशिकान्त सीढ़ियों पर गिर पड़ा। मुँह से झाग निकलने लगे। लोग घबराकर चीखने लगे–
नाग ने काट लिया। वैद्यजी को बुलाओ।
हे भगवान ! यह क्या वज्र टूट पड़ा। कौन से पाप उदय में आ रहे हैं।
और नाग ने शशिकान्त के पैर में जोर से डंक मारा।
हाय ! हाय ! काट लिया। नाग ने काट लिया।
बचाओ ! भागो !
काला नाग डंक मारकर गायब हो गया।
कुछ ही देर में शशिकान्त की मृत्यु हो गई।

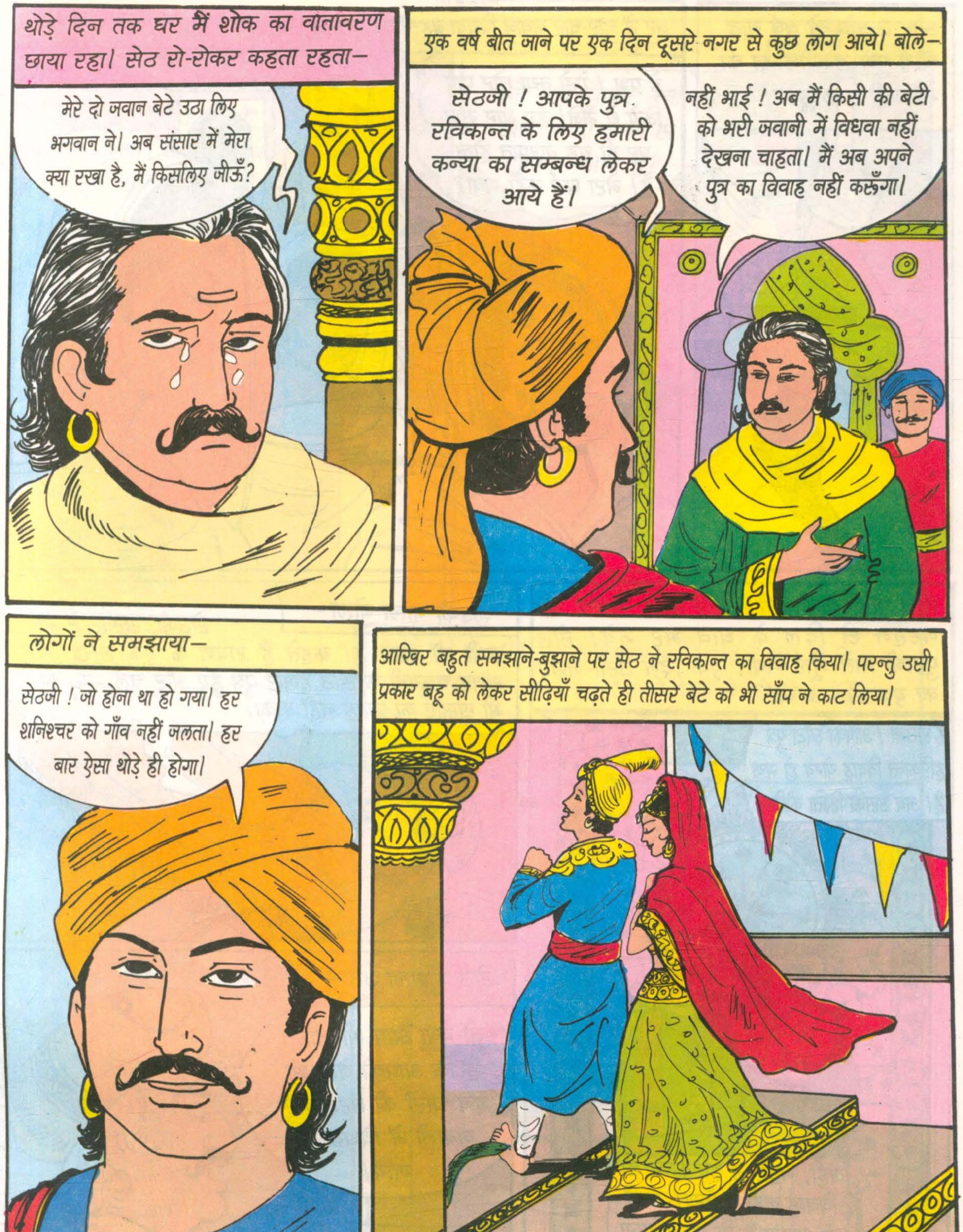
थोड़े दिन तक घर में शोक का वातावरण छाया रहा। सेठ रो-रोकर कहता रहता–
मेरे दो जवान बेटे उठा लिए भगवान ने। अब संसार में मेरा क्या रखा है, मैं किसलिए जीऊँ?
एक वर्ष बीत जाने पर एक दिन दूसरे नगर से कुछ लोग आये। बोले–
सेठजी ! आपके पुत्र रविकान्त के लिए हमारी कन्या का सम्बन्ध लेकर आये हैं।
नहीं भाई ! अब मैं किसी की बेटी को भरी जवानी में विधवा नहीं देखना चाहता। मैं अब अपने पुत्र का विवाह नहीं करूँगा।
लोगों ने समझाया–
सेठजी ! जो होना था हो गया। हर शनिश्चर को गाँव नहीं जलता। हर बार ऐसा थोड़े ही होगा।
आखिर बहुत समझाने-बुझाने पर सेठ ने रविकान्त का विवाह किया। परन्तु उसी प्रकार बहू को लेकर सीढ़ियाँ चढ़ते ही तीसरे बेटे को भी साँप ने काट लिया।

और उसके दो वर्ष बाद चौथे पुत्र लक्ष्मीकान्त का भी यही हाल हुआ।
घर में चार-चार जवान विधवा बहुओं को देखकर सेठ अपने भाग्य को कोसता रहता–
हे प्रभु ! ऐसे क्या घोर पाप किये थे मैंने। हर बार मुझ पर ही यह वज्रपात होता है। मेरा धर्म कहाँ गया?
तीन वर्ष बीत गये। धीरे-धीरे समय की मरहम से दिल के घाव भर गये। सेठ पुरानी बातें भूल गया। एक दिन उसी नगर का एक सेठ आया।
सेठजी ! आपका छोटा पुत्र हरिकान्त विवाह योग्य हो गया है। अब उसका रिश्ता कीजिए।
नहीं, नहीं, मैं हरिकान्त का विवाह नहीं करूँगा। मरने से अच्छा है कि वह कुँवारा ही रहे।
लड़की वाला बोला–
सेठजी, संसार में मौत सभी को आती है। कहते हैं रावण के एक लाख और सगर चक्रवर्ती के साठ हजार पुत्र हुए और चले गये। फिर भी संसार का प्रवाह नहीं रुका।
सेठ झुँझला उठा–
तो क्या आप भी चाहते हैं कि आपकी बेटी भी इन चारों की तरह भरी जवानी में विधवा हो जाये।

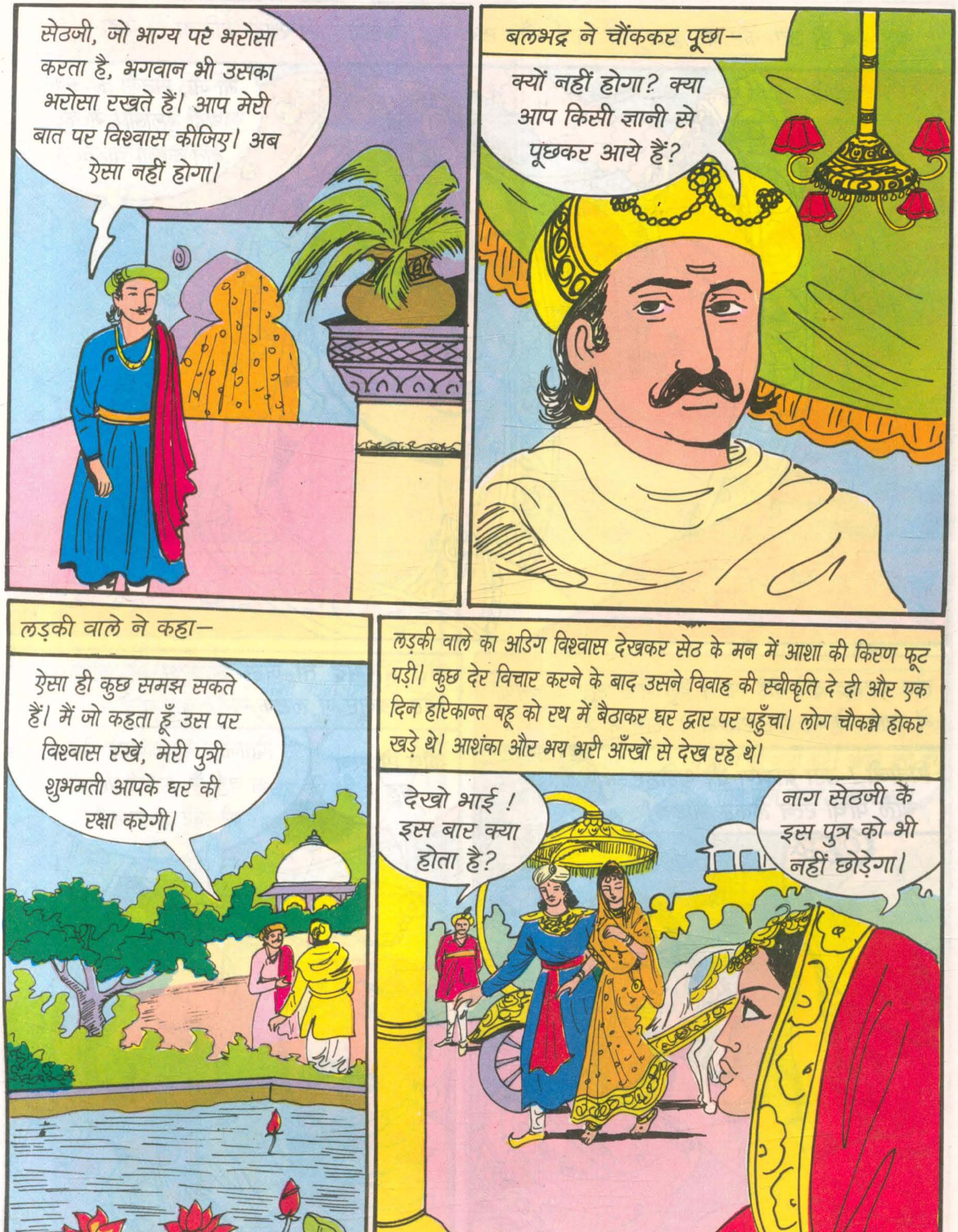
सेठजी, जो भाग्य पर भरोसा करता है, भगवान भी उसका भरोसा रखते हैं। आप मेरी बात पर विश्वास कीजिए। अब ऐसा नहीं होगा।
बलभद्र ने चौंककर पूछा–
क्यों नहीं होगा? क्या आप किसी ज्ञानी से पूछकर आये हैं?
लड़की वाले ने कहा–
ऐसा ही कुछ समझ सकते हैं। मैं जो कहता हूँ उस पर विश्वास रखें, मेरी पुत्री शुभमती आपके घर की रक्षा करेगी।
लड़की वाले का अडिग विश्वास देखकर सेठ के मन में आशा की किरण फूट पड़ी। कुछ देर विचार करने के बाद उसने विवाह की स्वीकृति दे दी और एक दिन हरिकान्त बहू को रथ में बैठाकर घर द्वार पर पहुँचा। लोग चौकन्ने होकर खड़े थे। आशंका और भय भरी आँखों से देख रहे थे।
देखो भाई ! इस बार क्या होता है?
नाग सेठजी के इस पुत्र को भी नहीं छोड़ेगा।

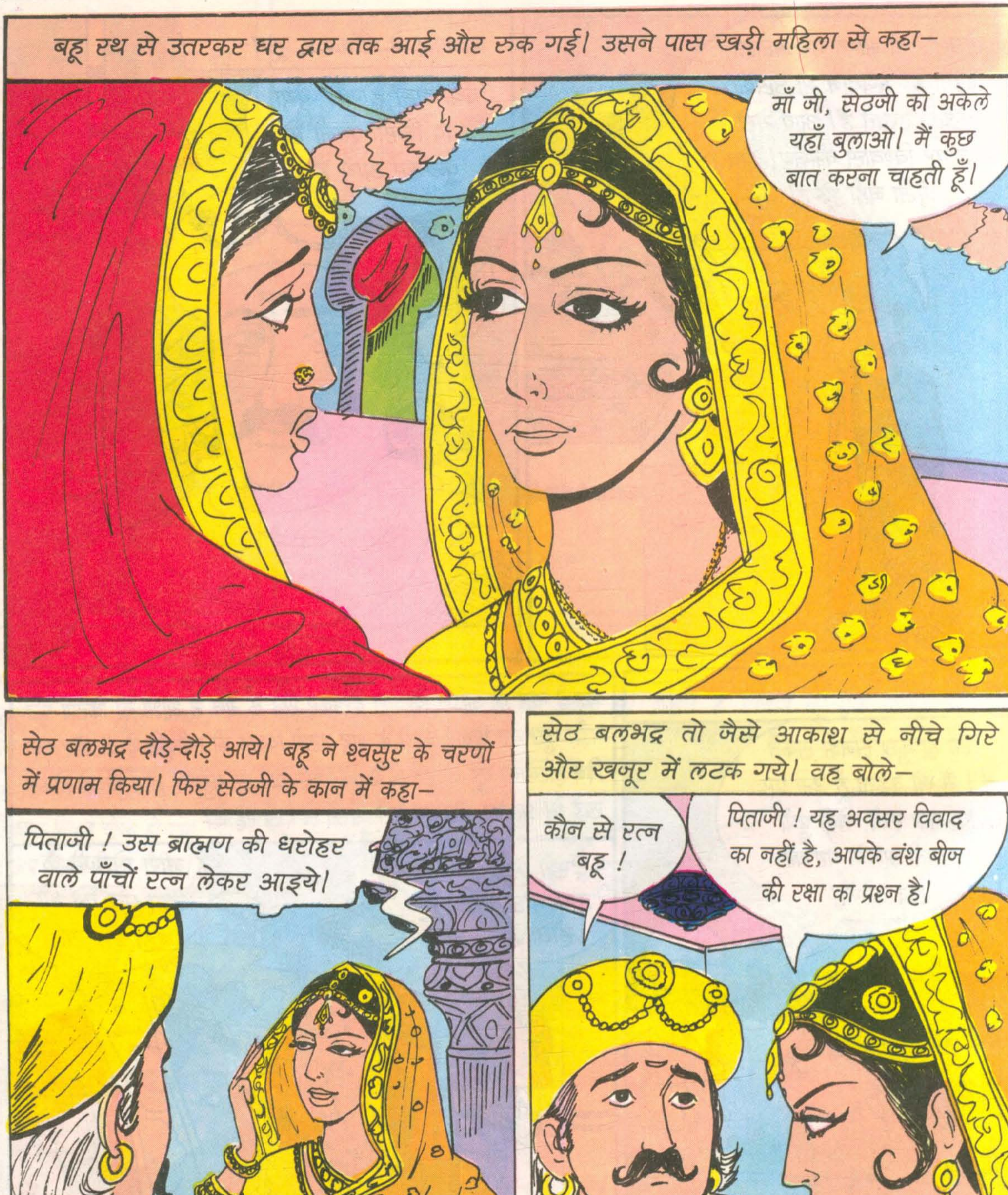
बहू रथ से उतरकर घर द्वार तक आई और रुक गई। उसने पास खड़ी महिला से कहा–
माँ जी, सेठजी को अकेले यहाँ बुलाओ। मैं कुछ बात करना चाहती हूँ।
सेठ बलभद्र दौड़े-दौड़े आये। बहू ने श्वसुर के चरणों में प्रणाम किया। फिर सेठजी के कान में कहा–
पिताजी ! उस ब्राह्मण की धरोहर वाले पाँचों रत्न लेकर आइये।
सेठ बलभद्र तो जैसे आकाश से नीचे गिरे और खजूर में लटक गये। वह बोले–
कौन से रत्न बहू !
पिताजी ! यह अवसर विवाद का नहीं है, आपके वंश बीज की रक्षा का प्रश्न है।

सेठ–
बहू, तुम्हें कैसे मालूम? इस रहस्य को तो मेरे और भगवान के सिवाय कोई नहीं जानता।
पिताजी ! देर मत कीजिए, कहीं कोई अनर्थ न घट जाये। पानी आने से पहले ही पाल बाँध लीजिए और हाँ, एक कटोरे में मिश्री मिला गाय का दूध भी लेकर आइये।

सेठ घबराया हुआ घर के अन्दर दौड़ा। तुरन्त रत्नों का डिब्बा और एक कटोरी मिश्री मिला दूध लेकर वापस आया–
बहू, यह लो। इसमें से मैंने दो रत्न खर्च कर दिये हैं। केवल तीन रत्न ही बचे हैं।

शुभमती ने डिब्बा ओढ़नी में छिपा लिया और दूध का कटोरा लेकर सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। लोग आशंका से सिहर उठे–
अभी नाग निकलकर आयेगा।
बहू को भी नहीं छोड़ेगा।

शुभमती छठी सीढ़ी पर चढ़ी और बैठ गई। सातवीं सीढ़ी पर उसने दूध का कटोरा रखा, रत्नों का डिब्बा निकालकर रखा और हाथ जोड़कर बोली–
हे नाग देवता ! मेरे श्वसुर ने जो विश्वासघात आपके साथ किया, उस दुष्कृत्य को क्षमा करें। अपने बचे हुए तीन रत्न लेकर सन्तोष करें।

तभी सर्र-सर्र करता एक लम्बा नाग सीढ़ियों के नीचे से निकला। सभी लोग सहमकर दूर-दूर हो गये।
हे नाग देवता ! मैं अपने शीलधर्म की साक्षी से आपसे प्रार्थना करती हूँ, मुझे मेरे सुहाग की भीख दीजिए।
नाग ने कटोरे में से दूध पीया।
फिर रत्न के डिब्बे में से एक रत्न उठाया।
और वापस चला गया।

चारों तरफ से लोगों ने शुभमती पर फूलों की वर्षा की। सेठ बलभद्र ने कहा–
बहू, यह सब क्या रहस्य है। हमें बताओ तो सही।
सती शुभमती की जय।
शुभमती ने कहा–
पिताश्री ! जो बीज बोया जाता है, वह अवश्य ही अंकुरित होता है। आपने ब्राह्मण पुत्र के पाँच रत्नों की धरोहर दबा ली थी। उसके साथ विश्वासघात किया, वही ब्राह्मणपुत्र आर्त्तध्यान से मरकर नाग बना।
शुभमती आगे बोली–
वही नाग अपना बदला लेने के लिये इस भवन में आकर छुपा और एक-एक करके आपके चार पुत्रों का काल बना। परन्तु आज मैंने उससे क्षमा माँगी और उसकी धरोहर वापस लौटायी तो शान्त होकर आपके पुत्र को जीवनदान दे दिया।
सेठ ने आश्चर्य से पूछा–
परन्तु उसने एक ही रत्न क्यों लिया?
क्यों कि चार रत्नों के बदले वह आपके चार पुत्रों की जान जो ले चुका है। उसका हिसाब बराबर।

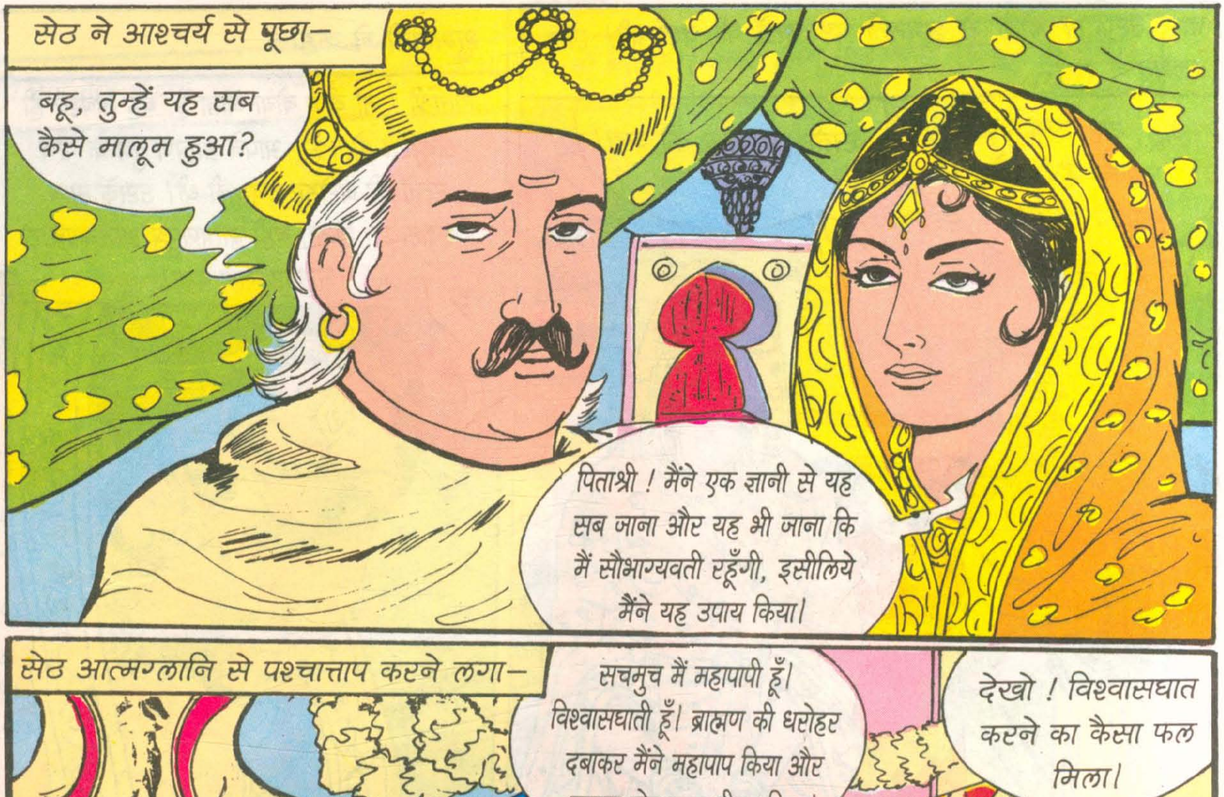

चरित्र बोध :

श्रावक के दूसरे व्रत में नियम दिलाया जाता है–''किसी की धरोहर नहीं मारूँगा'' किसी की अमानत हड़पकर उसके साथ विश्वासघात करना महापाप है। जिसके साथ विश्वासघात होता है, उसकी आत्मा अत्यन्त व्याकुल और संतप्त रहती है, जिस कारण गहरी शत्रुता बँध जाती है। जन्म-जन्म तक यह वैर का बदला प्रतिशोध के रूप में चलता रहता है। प्राचीन जैन साहित्य की यह कथा हमें विश्वासघात के महापाप से बचने की शिक्षा देती है।

दुराग्रह का फल

प्राचीन समय में श्वेताम्बिका का राजा प्रदेशी कट्टर नास्तिक था। उसने केशीकुमार श्रमण नामक ज्ञानी आचार्य से आत्मा के विषय में चर्चा की। आचार्य के तर्कों से प्रभावित तो हुआ वह, परन्तु अपनी पकड़ नहीं छोड़ रहा था। तब केशीकुमार ने कहा– राजन् ! जो अपने असत्य पक्ष का दुराग्रह रखता है, वह अन्त में उस लौह वणिक की तरह पछताता है। राजा के पूछने पर केशी श्रमण ने ये कथा कही–

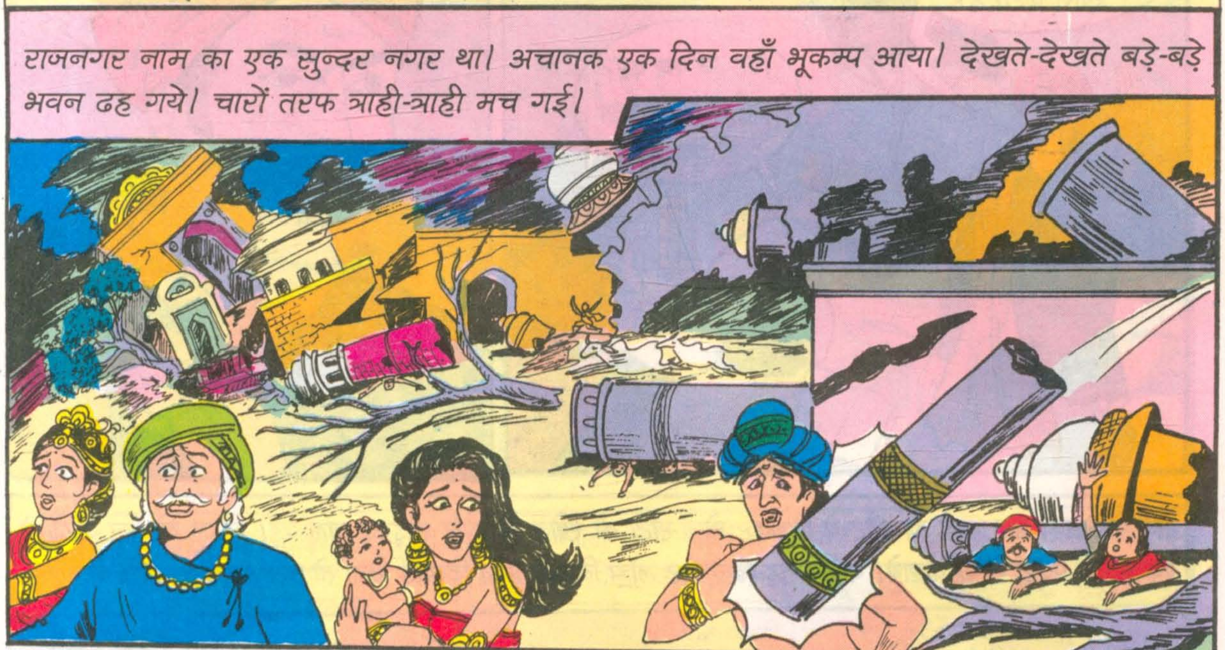

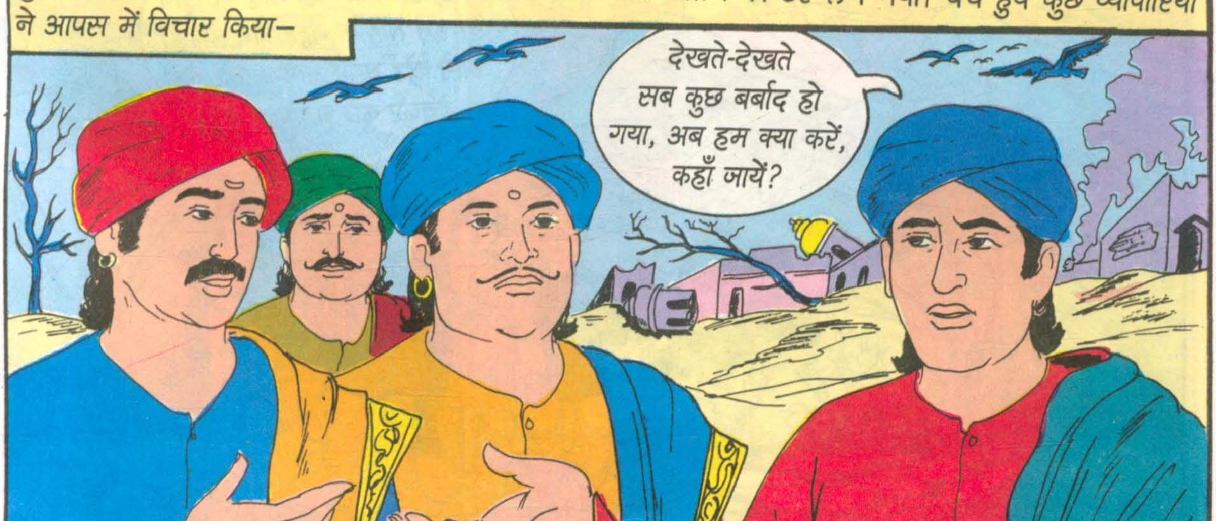

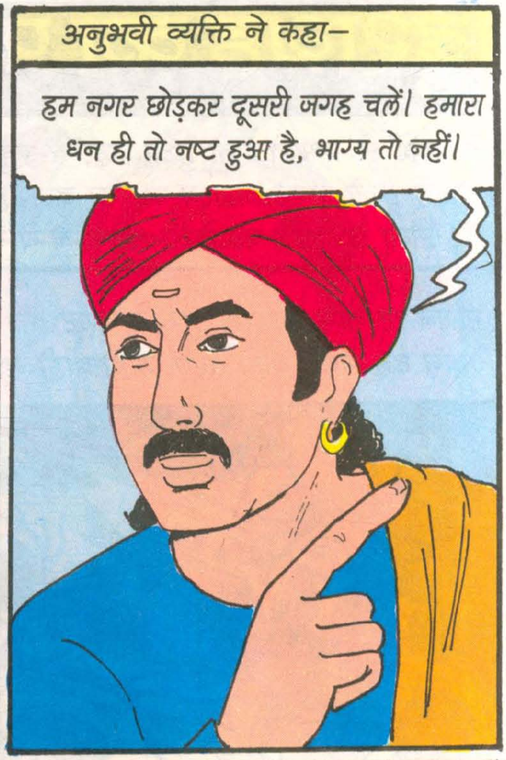

सब ने उसकी बात मान ली और वे मिलकर रोजी-रोटी की खोज में नगर छोड़कर चल पड़े। जंगल को पार करके वे एक पहाड़ी प्रदेश में पहुँच गये। वहाँ जगह-जगह पर लोहा बिखरा हुआ दिखाई दिया तो उस अनुभवी व्यक्ति ने कहा–

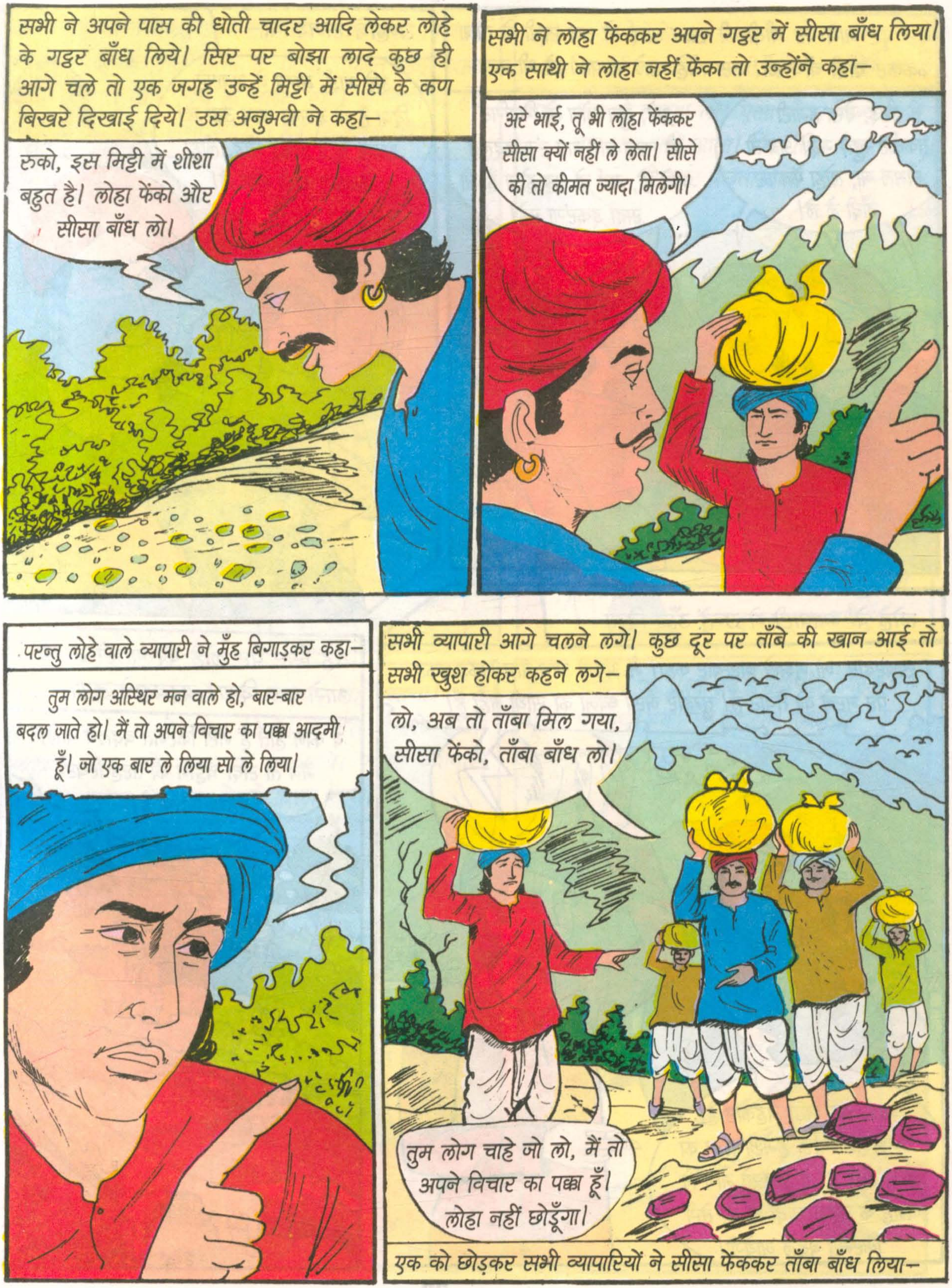
सभी ने अपने पास की धोती चादर आदि लेकर लोहे के गट्ठर बाँध लिये। सिर पर बोझा लादे कुछ ही आगे चले तो एक जगह उन्हें मिट्टी में सीसे के कण बिखरे दिखाई दिये। उस अनुभवी ने कहा–
रुको, इस मिट्टी में शीशा बहुत है। लोहा फेंको और सीसा बाँध लो।
सभी ने लोहा फेंककर अपने गट्ठर में सीसा बाँध लिया। एक साथी ने लोहा नहीं फेंका तो उन्होंने कहा–
अरे भाई, तू भी लोहा फेंककर सीसा क्यों नहीं ले लेता। सीसे की तो कीमत ज्यादा मिलेगी।
परन्तु लोहे वाले व्यापारी ने मुँह बिगाड़कर कहा–
तुम लोग अस्थिर मन वाले हो, बार-बार बदल जाते हो। मैं तो अपने विचार का पक्का आदमी हूँ। जो एक बार ले लिया सो ले लिया।
सभी व्यापारी आगे चलने लगे। कुछ दूर पर ताँबे की खान आई तो सभी खुश होकर कहने लगे–
लो, अब तो ताँबा मिल गया, सीसा फेंको, ताँबा बाँध लो।
तुम लोग चाहे जो लो, मैं तो अपने विचार का पक्का हूँ। लोहा नहीं छोड़ूँगा।
एक को छोड़कर सभी व्यापारियों ने सीसा फेंककर ताँबा बाँध लिया–

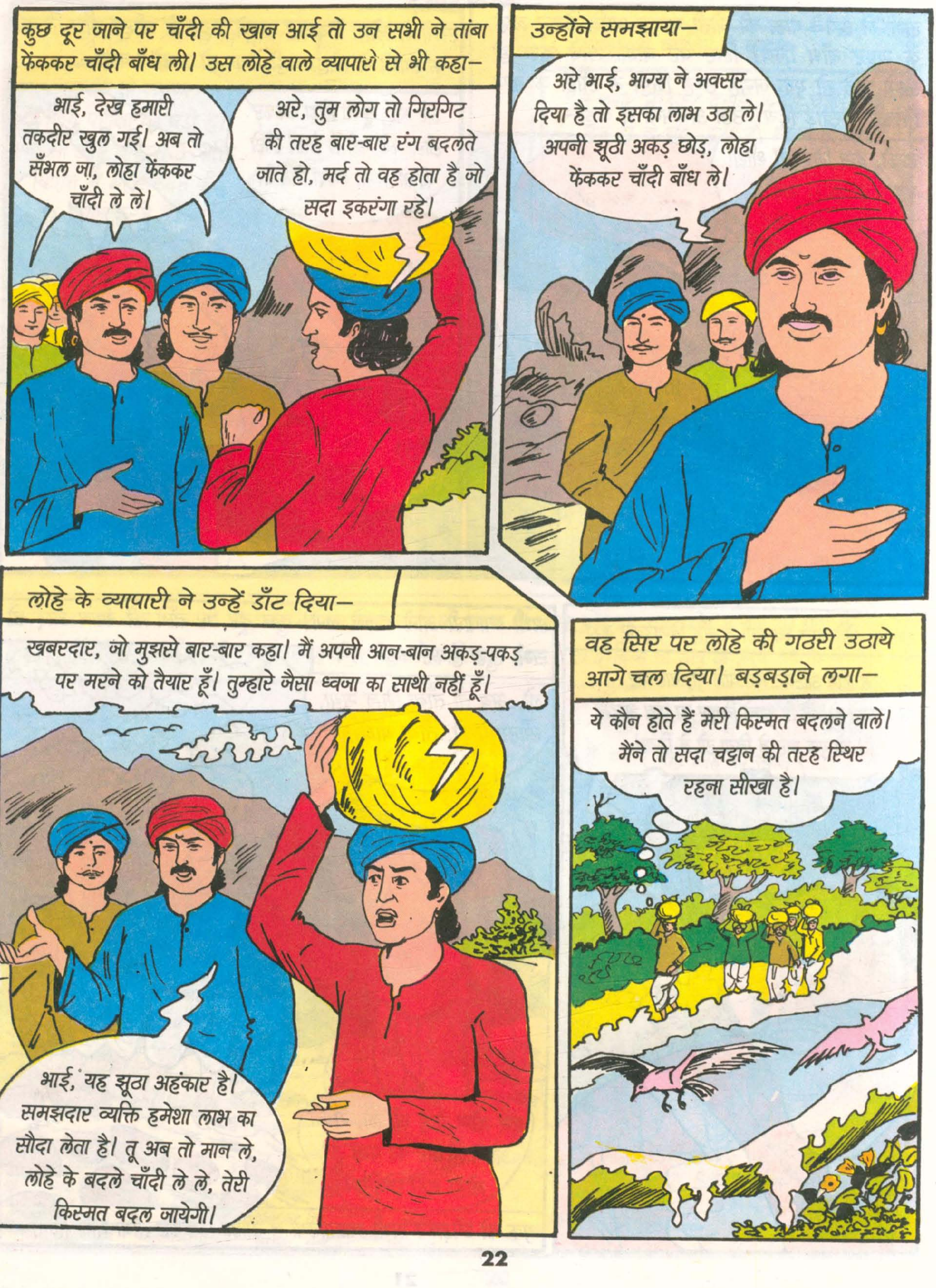
कुछ दूर जाने पर चाँदी की खान आई तो उन सभी ने तांबा फेंककर चाँदी बाँध ली। उस लोहे वाले व्यापारी से भी कहा–
भाई, देख हमारी तकदीर खुल गई। अब तो सँभल जा, लोहा फेंककर चाँदी ले ले।
अरे, तुम लोग तो गिरगिट की तरह बार-बार रंग बदलते जाते हो, मर्द तो वह होता है जो सदा इकरंगा रहे।
उन्होंने समझाया–
अरे भाई, भाग्य ने अवसर दिया है तो इसका लाभ उठा ले। अपनी झूठी अकड़ छोड़, लोहा फेंककर चाँदी बाँध ले।
लोहे के व्यापारी ने उन्हें डाँट दिया–
खबरदार, जो मुझसे बार-बार कहा। मैं अपनी आन-बान अकड़-पकड़ पर मरने को तैयार हूँ। तुम्हारे जैसा ध्वजा का साथी नहीं हूँ।
भाई, यह झूठा अहंकार है। समझदार व्यक्ति हमेशा लाभ का सौदा लेता है। तू अब तो मान ले, लोहे के बदले चाँदी ले ले, तेरी किस्मत बदल जायेगी।
वह सिर पर लोहे की गठरी उठाये आगे चल दिया। बड़बड़ाने लगा–
ये कौन होते हैं मेरी किस्मत बदलने वाले। मैंने तो सदा चट्टान की तरह स्थिर रहना सीखा है।

इस तरह चलते-चलते आगे सोने की खान मिली तो बाकी सबने चाँदी फेंककर सोना ले लिया; किन्तु लोहे वाला अपनी ऐंठ में लोहा लिये ही चलता रहा। आखिरी में हीरे की खान आ गई। सभी व्यापारी हर्ष से उछल पड़े।
वाह, अब तो तकदीर खुल गई, सोना फेंको, हीरे बाँध लो।
सभी हीरे बटोरने लगे।
हीरे इकट्ठे करने के बाद वे चलने लगे तो उन सभी को लोहा व्यापारी पर बड़ी दया आ रही थी। उन्होंने कहा—
भाई, अब तो समझ लो। ऐसा मौका जिन्दगी में बार-बार नहीं आता। फिर सिर पीट-पीटकर पछताओगे।
तुम मेरे पीछे क्यों पड़े हो? एक बार कह दिया न, मैंने जो ले लिया सो ले लिया। मैं तुम्हारी तरह बदलूराम नहीं हूँ।
सभी साथियों के कहने पर भी वह नहीं माना। हीरे लेकर सभी आगे चल दिये। चलते-चलते सभी व्यापारी एक बड़े नगर में आ गये। लोहा व्यापारी अकेला बाजार में लोहा बेचने चला गया।
इस पूरे लोहे के बदले तुम्हें एक डलिया चने मिल सकते हैं।
ठीक है दे दो।
लोहा व्यापारी ने एक डलिया चने ले लिये और नगर में घूम-घूमकर चने बेचने लगा। कैसे भी अपना गुजारा चलाने लगा।
चने ले लो ताजे भुने चने।

हीरे लाने वाले व्यापारियों में से एक ने नगर के जौहरी की दुकान पर हीरे दिखाये। जौहरी बोला–
सेठ, तुम्हारा एक-एक हीरा लाखों का है।
शुभ लाभ
उस व्यापारी ने कुछ हीरे बेचकर नगर में एक बड़ी हवेली खरीदी और आराम के साथ रहने लगा। एक दिन हीरे का व्यापारी अपनी हवेली में बैठा था। तभी उसने फेरी वाले की आवाज सुनी–
चने ले लो, मूँगफली ले लो।
अरे, यह तो हमारा साथी है, लोहे वाला....
सेठ ने नौकर भेजकर फेरी वाले को बुलवा लिया। उसे फटे-चिथड़ों में लिपटे देखा तो बड़ी दया आई–
देखो, तकदीर का चक्कर। किसी को मिला हीरा, किसी को कंकर।
फिर उसने फेरी वाले की आँख में आँख डालकर पूछा–
फेरी वाले, मुझे पहचानते हो? पहले कभी देखा है?
नहीं मालिक, आप जैसे सेठ के दर्शन आज पहली बार ही किये हैं।
वैभवशाली कपड़ों की वजह से फेरीवाले ने उसे पहाचाना नहीं।

सेठ बोला–
याद है, तुम हम एक साथ राजनगर से निकले थे। रास्ते में तुमने लोहा भरा था, हमने हीरे।
फेरी वाला कुछ देर तक घूर-घूरकर सेठ को देखता रहा। उसको पिछले दृश्य याद आने लगे।
लोहे की गठरी लिये चल रहा है। साथियों ने हीरे दिये।
उसने हीरे फेंक दिये।
वह चक्कर खाकर आँगन में गिर गया। नौकरों ने पानी के छींटे मारे तो उसे होश आया। वह फूट-फूटकर रोने लगा–
हाय, मेरी फूटी तकदीर, मैं तो इनको गालियाँ देता था। तुम सब बदलूराम हो, मैं मर्द हूँ। मेरी किस्मत खराब थी जो मैंने इनकी बात नहीं मानी। अड़ा रहा।

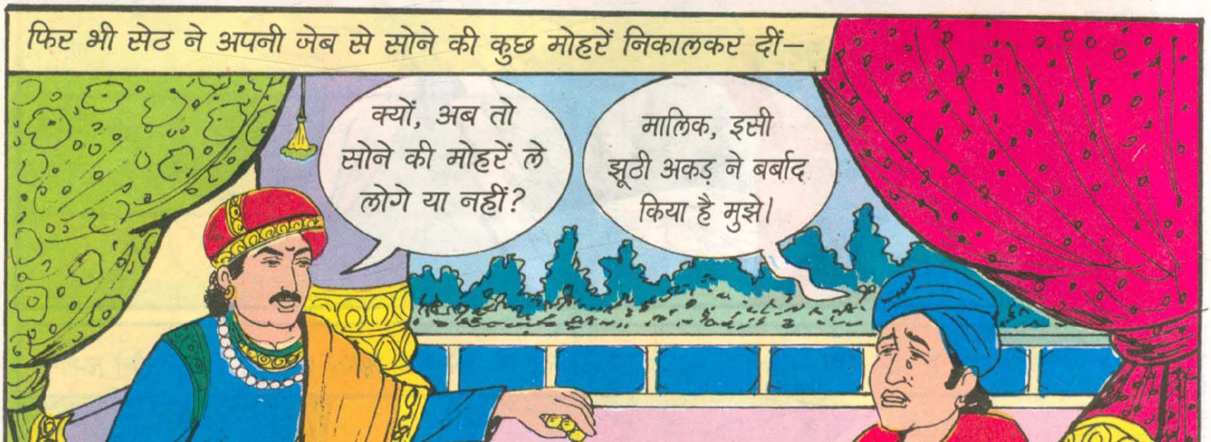

कथाबोध–

ज्ञानी आचार्यों ने कहा है–जो व्यक्ति अज्ञान दशा में असत्य को ग्रहण कर चुका है, परन्तु ज्ञान होने पर, सत्य का दर्शन होने पर भी अगर अपने दुराग्रह और अहंकारवश सत्य को स्वीकार नहीं करता तो वह झूठी पकड़ वाला अंत में इसी प्रकार पछताता है। आधार–रायपसेणिय सुत्त

आत्मा का दर्शन

एक बार केशीकुमार श्रमण से राजा प्रदेशी ने कहा–आप कहते हैं आत्मा शरीर में रहती है, परन्तु मैंने तो एक आदमी के शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके देखा, कहीं भी आत्मा दिखाई नहीं दी। तब केशीकुमार ने चार लकड़हारों का उदाहरण देकर उन्हें समझाया।

एक गाँव में चार लकड़हारे थे। रोज सुबह आसपास के जंगलों में जाते, लकड़ियाँ काटते, गट्ठर बाँधकर लाते और सायंकाल नगर में आकर बेच देते।

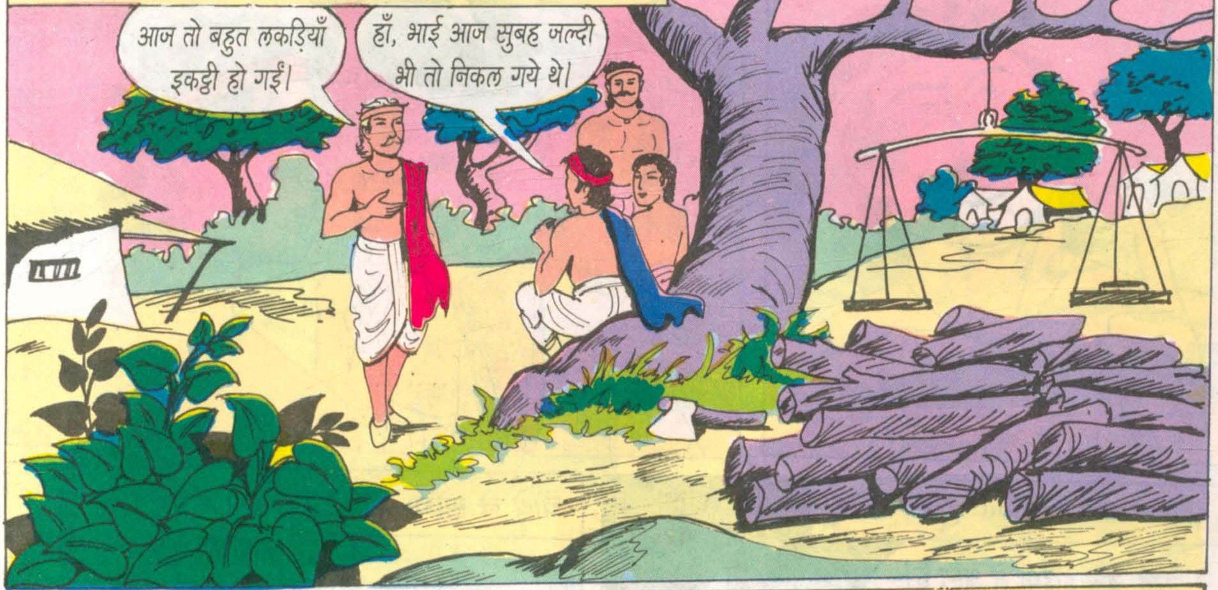

एक बार कई दिनों तक खूब वर्षा हुई। लकड़हारे जंगल में लकड़ियाँ काटने नहीं जा सके। जब वर्षा बन्द हुई तो चारों एकत्रित हुए। एक बोला–

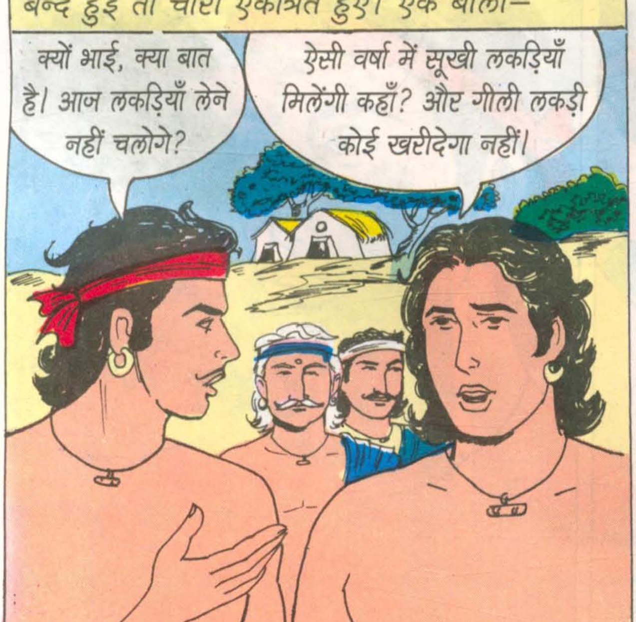

दूसरे ने कहा–

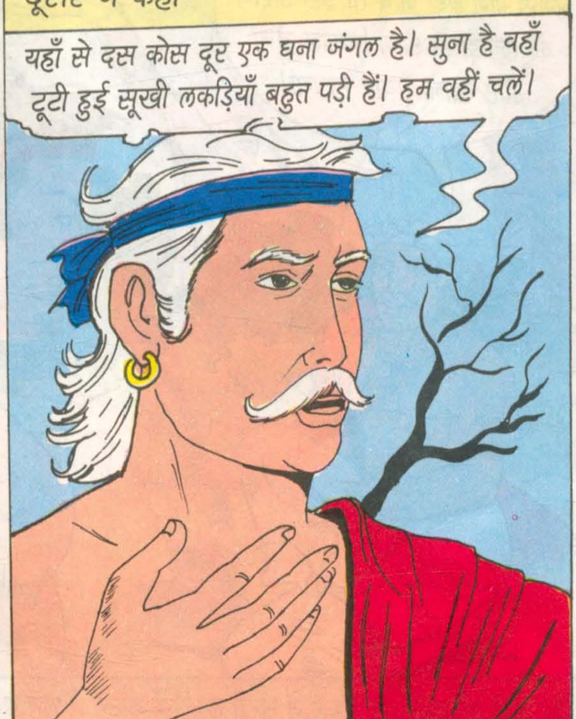

तीसरे ने कहा–
हम कच्चा सामान और अग्नि साथ ले लेते हैं। एक खाना पकायेगा, बाकी तीनों लकड़ियाँ काट लेंगे।
खाने का सामान आदि लेकर चारों दूर जंगल में चले गये। उनमें से जो एक कमजोर था उसे खाना पकाने का काम दे दिया गया–
तू शाम तक हमारे लिये खाना पकाकर रखना। हम तेरे लिये लकड़ियाँ ले आयेंगे।
बूढ़े ने उसे समझाते हुए कहा–
देख, इस हंडिया में आग है। अगर आग बुझ जाये तो इस अरणि की लकड़ी से आग निकाल लेना और खाना तैयार रखना।
फिर तीनों लकड़हारे दूर जंगल में सूखी लकड़ियाँ काटने में लग गये।
चौथे ने सोचा–
अभी से भोजन की क्या जल्दी है। कुछ देर विश्राम कर लूँ और फिर भोजन तैयार कर लूँगा।

वह एक वृक्ष की छाया में लेट गया। लेटते ही उसे नींद आ गई। जब नींद खुली तो देखा–
अरे सूरज तो पश्चिम की ओर जा रहा है, जल्दी-जल्दी भोजन बना लूँ।
वह लकड़ियाँ इकट्ठी कर हंडिया से आग निकालने लगा–
ओह, अब क्या करूँ। आग तो सब बुझ गई।
तभी उसे याद आया–
अरे हाँ, काका ने अरणि लकड़ी से आग प्रकट करने को कहा था। सो अभी आग जलाता हूँ।
उसने अरणि लकड़ी ली। उसके दो टुकड़े किये–
अरे, आग नहीं निकली।
फिर चार टुकड़े किये–
ओह, अब भी आग नहीं जली। अब खाना कैसे पकाऊँगा?

वह सिर पर हाथ रखकर सोचने बैठ गया और मन ही मन साथियों पर झुँझलाने लगा–
अरणि की लकड़ी में तो कहीं आग है ही नहीं, क्या खाक जलेगी।
उसने अरणि लकड़ी के आठ-दस टुकड़े किये फिर भी आग की चिंगारी नहीं फूटी तो उन्हें गालियाँ देने लगा–
कैसे मूर्ख हैं, मुझसे झूठ बोले। अगर मुझे यही पता होता तो पहले से लाई गई आग को सँभालकर रखता।
वह गुस्से से भर्राया। इधर-उधर घूमने लगा। तभी तीनों साथी गट्ठर लेकर आ गये। बोले–
खाना तैयार है न, बहुत कड़ाके की भूख लगी है।
वह साथी उन पर झल्लाया–
खाना कैसे बनाता। तुम लोग खुद मूर्ख हो और मुझे भी मूर्ख बना दिया।

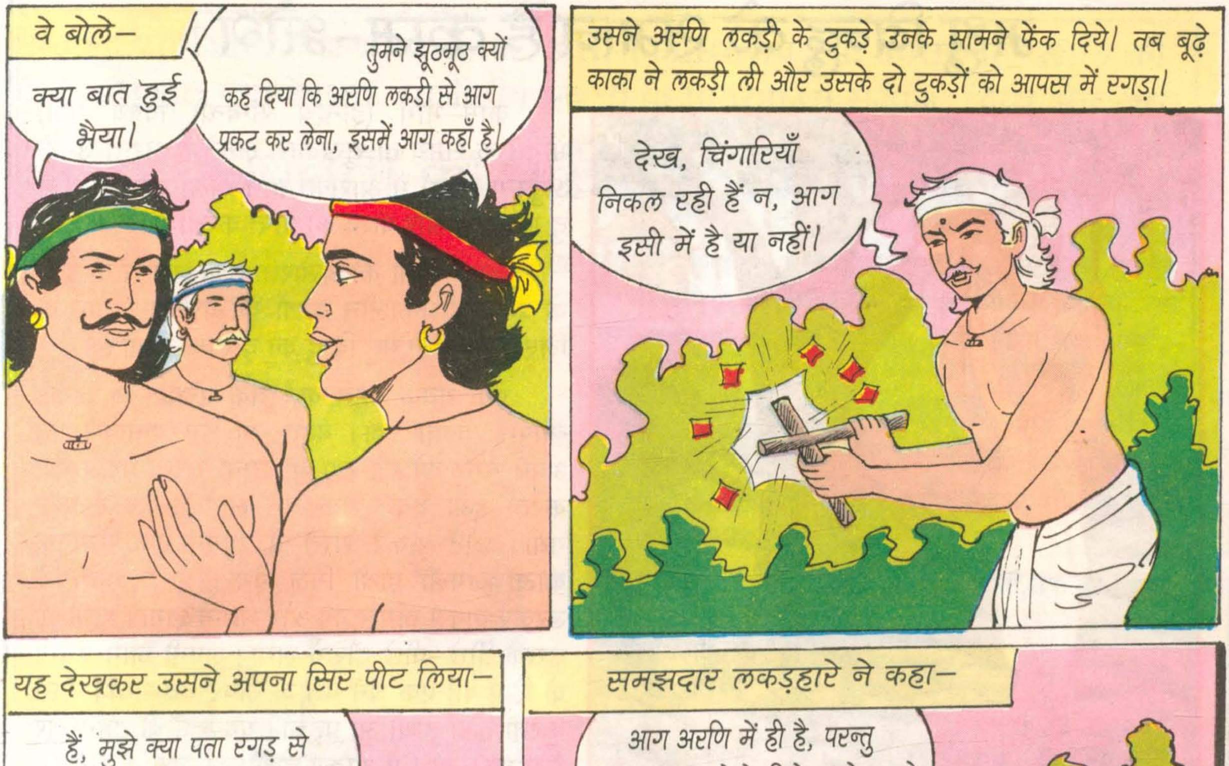

कथाबोध–

श्रमण केशीकुमार ने राजा को कहानी सुनाकर समझाया–राजन् ! इसी तरह शरीर के भीतर ज्योतिस्वरूप आत्मा रहता है, परन्तु शरीर के टुकड़े करने से उसका दर्शन नहीं हो सकता। तप, ध्यान-योग द्वारा शरीर को तपाने से ही आत्मा रूप ज्योति का दर्शन होता है।

आधार–रायपसेणिय सुत्त

मधु बिन्दु के समान है काम-भोग

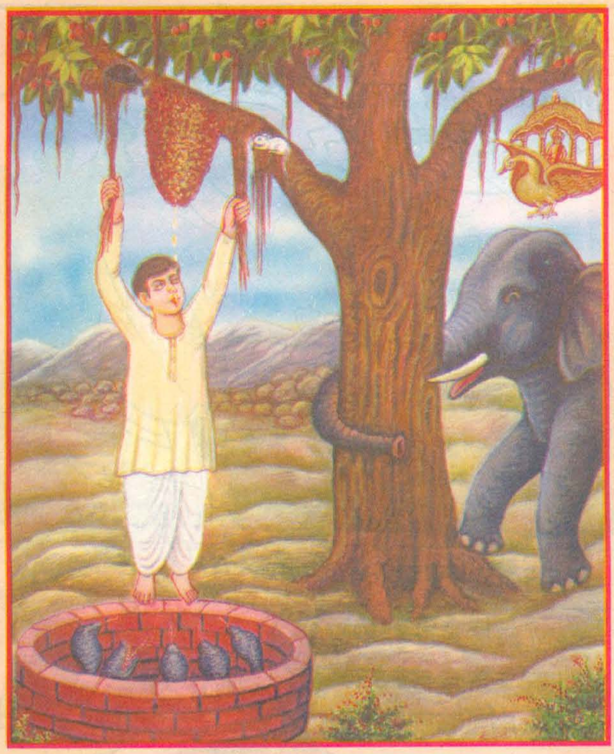

काम–भोग (इन्द्रिय सम्बन्धी विषय–सुख) भोगने के समय तो सुखकारी लगते हैं, परन्तु उनके अनुराग (मोह) में आसक्त होने वाला जीव अन्त में दुःख क्लेश और पीड़ा को प्राप्त करता है।

काम–भोगों की असारता तथा क्षणभर के सुख के बदले दीर्घकालीन दुःखों की परम्परा बताने के लिए आचार्यों ने मधु बिन्दु का दृष्टान्त दिया है।

एक युवक बहुत वर्षों तक परदेश में रहकर व्यापार करता रहा। बहुत–सा धन कमाकर वह अपने नगर को जा रहा था लम्बा रास्ता पैदल पार करता हुआ युवक एक घने लम्बे जंगल में फंस गया। छोटे संकरे रास्तें में सामने एक भयानक काला जंगली हाथी मिल गया। युवक हाथी से डरकर वापस जंगल की ओर भागने लगा। हाथी भी उसके पीछे–पीछे दौड़ने लगा। अपनी जान बचाने के लिए वह एक घने पेड़ के ऊपर चढ़ गया। पीछा करता हुआ हाथी आ पहुँचा। युवक ऊँची टहनी पर बैठा था। क्रोध में आकर हाथी उस वृक्ष के तने को सूंड़ से हिला–हिलाकर गिराने की चेष्टा करने लगा। वृक्ष जोर से हिला तो युवक के हाथों की पकड़ ढीली पड़ गई। डाली से हाथ छूटा, वह लटका, उसके ठीक ऊपर मधुमक्खियों का छत्ता था। उससे बूँद–बूँद शहद (मधु) टपक रहा था शहद की बूँद उसके मुँह में गिरी, उसे बड़ा सकून मिला। वृक्ष पर सफेद और काला दो चूहे भी बैठे थे। एक तरफ एक काला तथा दूसरी तरफ सफेद चूहा उन्हीं दोनों टहनियों को कुतर–कुतर कर काटने लग गये। युवक जहाँ लटका था उसके ठीक नीचे एक पुराना सूखा कुआँ था। उसके भीतर जहरीले सांप छुपे थे। ऊपर लटके युवक को देखकर वे भी उसके नीचे गिरने का इंतजार करते फुंफकार रहे थे।

उसी समय एक विद्याधर उधर से निकला। युवक को मौत के बीच फंसा देखकर उसे दया आ गई। उसने विमान रोका और युवक को पुकारा–"वत्स ! देख तेरे चारो तरफ मौत मुँह बाँए खडी है। ले, मैं विमान तेरे पास ला रहा हूँ। तू इसमें बैठ जा। मैं तुझे सुरक्षित अपने स्थान पर पहुँचा दूँगा।"

युवक बोला–"हे दयालु पुरुष ! एक मिनट रुक जाओ। शहद की एक बूँद और चाट लूँ। बहुत मीठा है यह मधु !" विद्याधर ने उसे समझाया–"मधु का लोभ छोड़, अपने चारों तरफ खड़ी मौत को देख और आ जा इस विमान में।"

"एक मिनट ! एक बूँद और।" इस तरह करते हुए युवक मधु बिन्दु का लोभ नहीं छोड़ सका। थक–हार कर विद्याधर आगे अपने रास्ते चला गया।

उपनयः यह संसार ही वृक्षरूप मानव जीवन है इनमें काल (मौत) रूपी हाथी है। काला चूहा रात, सफेद चूहा दिन का प्रतीक है। जो जीवन की डाली को हर क्षण काटे जा रहे है। कुएँ नरक आदि दुर्गति है और मधु बिन्दु के समान संसार के क्षणिक विषय–सुख हैं। विद्याधर के समान सद्‌गुरु है, जो उसे दुःखों से बचाने के लिए धर्म रूपी विमान लेकर खड़े हैं। परन्तु मोह–मूढ़ जीव (युवक) संसार के सुखों का स्वाद नहीं छोड़ रहा है। सद्‌गुरु की चेतावनी भी उसे बचा नही सकती।

■■

भगवान पार्श्वनाथ के प्रगट प्रभावक, असीम आस्थारूप, श्री उवसग्गहरं स्तोत्र की पावन अनुभूति करानेवाला, पोजीटीव एनर्जी के पावरहाउस समान, दिव्य और नव्य

पावनता का प्रतीक - पारसधाम.

- महानगरी मुंबई के हृदय समान घाटकोपर में **पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनि म.सा.** प्रेरित ज्ञान, ध्यान और साधना का एक अनोखा आधुनिक तकनीकी द्वारा तैयार किया गया धाम... पारसधाम..!
- पारसधाम... एक ऐसा धाम, जहाँ परमात्मा पार्श्वनाथ के दिव्य परमाणु और पूज्य गुरुदेव की अखंड साधना शक्ति के अध्यात्मिक Vibrations प्रतिपल प्रेरणा के साथ परम आनंद और परम शांति की अनुभूति कराता है।
- यहाँ मानवता की सपाटी से अध्यात्म के मोती तक की गहराई मिलती है।
- यहाँ है महाप्रभावक श्री उवसग्गहरं स्तोत्र की प्रभावक सिद्धीपीठिका जो मनवांछित फल देती है..!
- यहाँ है ऐसी कक्षाएं जहाँ Look n Learn के बच्चे अध्यात्म ज्ञान प्राप्त करते हैं।
- यहाँ है अध्यात्म ध्यान साधना की शक्ति का प्रतीकरूप पीरामीड साधना केन्द्र।
- यहाँ है शांतिपूर्ण विशाल प्रवचन कक्ष जहाँ संतो के एक एक शब्द अंतर को स्पर्श करते हैं।
- यहाँ है स्पीरीच्युअल शोप जहाँ उपलब्ध है अध्यात्म ज्ञान, साधना और प्रवचन आदि की पुस्तकें और C.D., V.C.D.
- यहाँ है एक अति आकर्षक आर्ट गैलेरी जहाँ आगम के रंगीन चित्रों की प्रदर्शनी आपके दर्शन को शुद्ध कर देगी।

महाप्रभावक श्री उवसग्गहरं पार्श्वनाथ परमात्मा की स्तुति के अखंड आराधक **पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनि म.सा.** की साधना के तरंगो से समृद्ध पारसधाम अध्यात्म की आत्मिक अनुभूति करानेवाला आधुनिक धाम है जो जैन समाज की उन्नति और प्रगति के लिए एक अनोखी मिसाल है।

यहाँ के नीति और नियम भी अपने आपमें विशेष महत्त्व रखते हैं।

यहाँ आनेवाली व्यक्ति को गुरुदर्शन और गुरुवाणी के लिए प्रथम 10 मिनिट ध्यान कक्ष में ध्यान साधना करके अपने मन और विचारों को शांत करना जरूरी है। तभी गुरुवाणी अंतरमे उतरेगी...!

मौन, शांति और अनुशासन यहाँ के मुख्य नियम हैं। यहाँ आनेवाले भक्तों का अनुशासन ही उनकी अलग पहचान है।

पारस के धाम में पारस बनने के लिए आईए पारसधाम..!

PARASDHAM

Vallabh Baug Lane, Tilak Road, Ghatkopar (E), Mumbai - 400 077. Tel : 32043232.

पूज्य गुरुदेव श्री नम्रमुनिजी म.सा. की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से प्रकाशित

सचित्र बाल Magazine

Look n Learn (पाक्षिक)

दस वर्षीय सदस्यता शुल्क 500 रूपये

प्रत्येक अंक अपनी एक मौलिक विशेषता के साथ प्रकाशित किया जाता है।

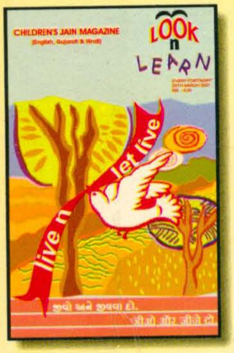

आज के बच्चे जो इंग्लीश माध्यम में पढ़ते हैं और जिन्हें ज्यादातर कार्टून, पिक्चर और Computer में ही रस है उनको जैनधर्म का ज्ञान उन्हीं की पद्धति से... उन्हीं की पसंद अनुसार कार्टून पिक्चर द्वारा, इंग्लिश, गुजराती और हिन्दी भाषा में देने के लिए **Look n Learn** बच्चों की एक Magazine हर पंद्रह दिन में प्रकाशित की जाती है ।

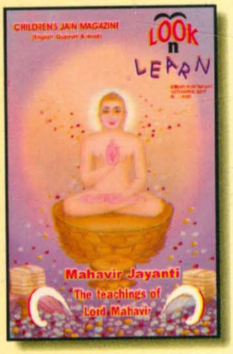

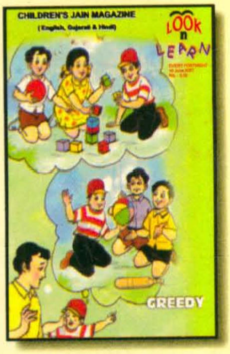

इस पत्रिका में बच्चों के लिए भगवान महावीर का बोध छोटी-छोटी कहानीयों द्वारा, भगवान का जीवन चरित्र, आगम आधारित कहानीयाँ, रंग भरो प्रतियोगिता, प्रश्न-कसौटी द्वारा ज्ञान, जैनधर्म का तत्त्वज्ञान, जैनधर्म के नियम और पूज्य गुरुदेव की मौलिक और सरल शैली में उनका तार्किक समाधान दिया जाता हैं । साथ में हर अंक में इनाम जीतने का अवसर..!

बच्चों को यह पत्रिका इतनी पसंद है कि वे एक अंक पढ़ने के साथ ही दूसरे अंक की प्रतीक्षा करने लगते हैं ।

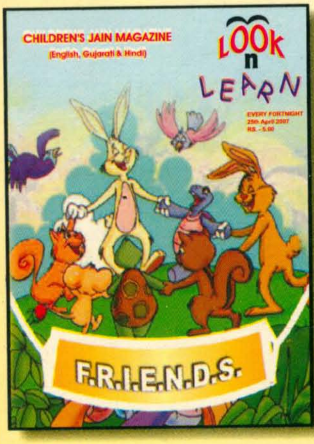

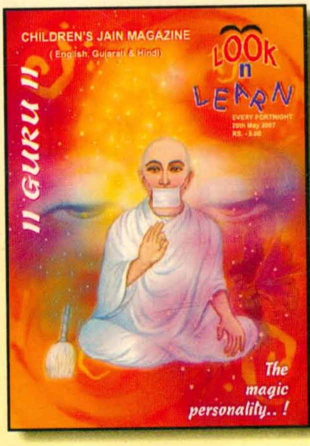

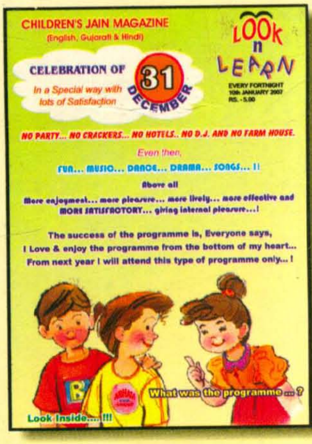

पत्रिका मंगवाने के लिए सदस्यता शुल्क अर्हम युवा ग्रुप के नाम से चेक / ड्राफ्ट द्वारा निम्न पते पर भेजे ।

LOOK N LEARN : ASHOK R. SHETH, TEL.: 25162440

5, Munisuvrat Ashish Building, cama lane, Ghatkopar (W), Mumbai - 400 086.